मर्यादाओं के पालन की प्रबल पक्षधर थीं दादी जी

त्याग-तपस्या-सेवा की साक्षात् प्रतिमूर्ति श्रद्धेय राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के जीवन चरित्र पर गहराई से दृष्टिपात करने से यह सहज ही विदित हो जाता है कि वे पूर्ण रूप से पिताश्री ब्रह्मा बाबा के समकक्ष थीं। विलक्षण प्रतिभाओं की धनी दादी प्रकाशमणि में प्रशासन के संचालन की जहाँ अद्भुत क्षमता थी, वहीं सरल स्वभाव से हर व्यक्ति को अपना बनाने में भी वे अतुलनीय थीं। हर कोई उनका सान्निध्य पाने के लिए उत्सुक रहता था। वे जितनी निर्माण, हंसमुख और सरलचित्त थीं उतनी ही नियमों, मर्यादाओं के पालन में गंभीर थीं। पवित्रता की वे प्रबल पक्षधर थीं। उनका मानना था कि क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि बुराइयों के वशीभूत होकर अपराध कार्य करने वाले पुरुषार्थी को कुछ हिदायत देकर, एक बार, स्वयं में सुधार लाने का अवसर दिया जाना चाहिए बशर्तेकि वह ईश्वरीय ज्ञान और सहज योग का निरन्तर अभ्यास करता रहे। किन्तु, बाबा द्वारा प्रदत्त प्रमुख नियम पवित्रता (ब्रह्मचर्य) रूपी लक्ष्मण रेखा भंग करने के अपराध को किसी भी मूल्य पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण की दुनिया (जहाँ यथा राजा तथा प्रजा होगी) में जाने के लिए प्रत्येक पुरुषार्थी को उन्हें आदर्श मानकर, उन जैसे आचरण को धारण करना है जिसका महत्त्वपूर्ण पहलू है – ब्रह्मचर्य। दूसरा, न किसी को दु:ख दो, न किसी से दु:ख लो। यदि कोई दु:ख देता है तो वह पाप का भागी बनता ही है किन्तु दु:ख लेने वाला भी दोषी माना जायेगा। उनका नारा था, दृढ़ता सफलता की चाबी है। हर पुरुषार्थी को इस चाबी को सदैव अपने पास रखना चाहिए।

क्षमाशील स्वभाव – एक बार की बात है, मैं मधुबन में अभी आया ही था कि किसी देश के राजा की ओर से एक क्रिस्टल का बहुमूल्य उपहार दादी जी को एक बहन ने लाकर दिया। उन्होंने वह उपहार मुझे देकर कहा कि इसे जाकर स्टोर में रख दो। मैं उपहार को बड़े गर्व से उठाकर ले जा रहा था कि स्टोर के बाहर पहुँचते ही उसका पैकिंग बॉक्स नीचे से खुल गया और उपहार गिरकर चकनाचूर हो

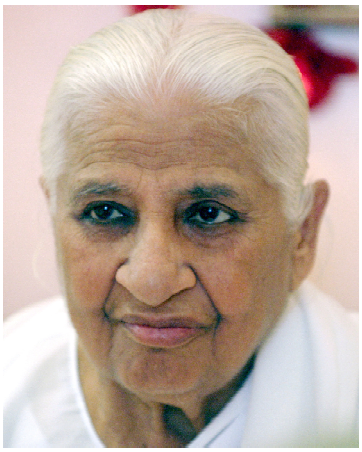

गया। मैं घबरा कर वापस न आकर सीधे ही कमरे में चला गया। दो-तीन घण्टे बाद जब दादी को घटना की जानकारी मिली तो उन्होंने एक भाई को भेजा जो मुझे कमरे में लेटा हुआ देख बिना कुछ कहे वापस चला गया। कुछ देर बाद दादी जी स्वयं ही कमरे में पहुँचीं। उन्हें देख मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। किन्तु मेरी सोच के विपरीत उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेर, ओमशान्ति कहते हुए कहा कि इसमें संकल्प चलाने की कोई बात नहीं, गलती आपकी नहीं बल्कि मेरी है। मैंने आपको यह नहीं बताया कि डिब्बे में रखी सौगात को दिखाए जाने के बाद डिब्बे के ऊपर का हिस्सा नीचे हो गया है। सावधानी से पकड़ने की

बात मैं ही नहीं कह सकी।

सहृदयता – इसी प्रकार एक बार पार्टी में आई हुई एक माता का हीरे जड़ा सोने का पैन किसी को मिला। उसने पहरे पर लाकर मुझे दिया। मैंने उसे साधारण पैन समझ कर, खोए हुए सामान के थैले में, जहाँ से भाई-बहनें आकर अपना सामान पहचान कर ले जाते थे, रख दिया और अपने काम में लग गया। दूसरे दिन वह माता आई और पैन का हुलिया बता कर मुझे पूछने लगी। मैंने कहा कि ऐसा पैन मिला तो था पर मैंने उसे थैले में रख दिया था। पैन न मिलने पर वह माता मेरे पर बिगड़ने लगी। इसी बीच दादी जी उधर पहुँच गईं और वस्तुस्थिति जानकर, मेरे से यह भी नहीं पूछा कि तुमने इतनी लापरवाही क्यों बरती। दादी जी उस माता को ईशू दादी जी के कार्यालय में ले गईं, उसे सोने का वह पैन दे दिया जो किसी ने थोड़े ही दिन पहले दादी जी को दिया था। दादी जी की सहृदयता को देख माता रोने लगी और उसने पैन वापस देकर क्षमा माँगी।

स्वयं अमल करने के बाद ही दूसरों को कहने की नसीहत – पहले, मानसून के दिनों में मधुबन निवासी अपनी-अपनी ड्यूटी के अलावा सब्जी काटना, रोटी बनाना आदि भण्डारे के काम दीदी-दादी के साथ मिलकर, खेल-खेल में आनन्द के साथ किया करते थे। एक बार दादी जी के साथ अन्य कई भाई-बहनें सब्जी काट रहे थे। उतने में एक भाई वहाँ आया और कहने लगा कि दादी जी, दोपहर को सभी सो जाते हैं, आप इन्हें कहें कि दोपहर के समय सोएँ नहीं, सब्जी काटकर रख दिया करें। दादी जी का उत्तर था कि मैं ऐसा नहीं कह सकती क्योंकि मैं स्वयं भी उस समय सोती हूँ। मैं सोई रहूँ और भाई-बहनों को कहूँ कि आप मत सोओ, सब्जी काटो, यह मेरा दस्तूर नहीं है। मैं वही कह सकती हूँ जिस पर मैं स्वयं अमल करती हूँ।

दादी के एक इशारे पर – ओमशान्ति भवन की नींव डालने की तैयारी में ब्लास्टिंग से तोड़े गए पत्थर उठाने थे, जिसके लिए दादी ने घण्टी बजा कर सभी को बुलाया और कहा, आज सबको एक नया खेल सिखायेंगे। सभी उत्सुकतावश दादी-दीदी के पीछे चल पड़े। दादी स्वयं पत्थर उठाने लगी। फिर क्या था, एक-से-एक जुड़कर कड़ी बन गई और पहाड़ से पत्थर सड़क के किनारे जमीन पर आने लगे। जमीन समतल करने तक यह काम चलता रहा। बीच-बीच में भाई-बहनें मजाक में दादी को कह रहे थे कि बंदरों के द्वारा पत्थर उठाने की जो बात कही गई है वह राम की नहीं बल्कि रमा की सेना (दादी जी का बचपन का नाम रमा था) की यादगार है। दादी जी भी हँसकर मजाक में यही बात दोहरा दिया करती थीं।

पत्रकारिता की ड्यूटी – एक बार दीदी के कमरे में दीदी-दादी, जगदीश भाई व निर्वैर भाई की मीटिंग चल रही थी, मैं अचानक किसी कार्यवश वहाँ पहुँच गया। मुझे देखते ही दादी जी ने बिना किसी भूमिका के सीधे ही कहा, अवतार, तुम्हें अखबारों की सेवा करनी है, उनमें खबरें बगैरह लिखकर भेजनी हैं, यह आज से तुम्हारी ड्यूटी रही। तब से लेकर यह सेवा निरन्तर जारी है। इस प्रकार हरेक में छिपी हुई विशेषताओं को परख कर, उनके अनुरूप कार्य सौंपने में उन्हें महारत हासिल थी।

स्थिति का संतुलन – जहाँ अभी पीसपार्क है वहाँ खाली मैदान हुआ करता था। हम लोग वहाँ पिकनिक पर जाते थे तो फुटबाल पर पहली किक मारकर दादी खेल की शुरूआत करती थीं। भाई लोग फुटबाल खेलते व बहनें दादी के साथ बैडमिंटन, म्यूजिकल चेयर आदि खेलने में व्यस्त होती। भाई लोग दादी को उलाहना देकर कहते

कि आप हमारे साथ नहीं खेल रही हैं तो दादी रिंग व बैडमिंटन से भाइयों के साथ खेलने लग जाती थीं। इसके बाद वहीं बैठकर, तपस्या कर, बाह्यमुखता और अन्तर्मुखता का संतुलन बनाने के लिए सबको प्रेरित करती थीं।

परीक्षा तीन भाइयों की – एक बार दोपहर को हम तीन भाई कहीं से आये, दीदी के कमरे के बाहर दीदी-दादी बैठी थीं। दादी ने हमें बुलाते हुए कहा कि दीदी ने अभी-अभी टोली (प्रसाद) बाँट कर पूरा किया है, केवल एक टुकड़ा बचा है, आप तीनों में से यह उसको मिलेगा जो सामने मेडिटेशन हॉल की सीढ़ियों को तीन छलाँग में पूरा करेगा। हमने दौड़कर छलाँग लगाई। मैंने तीन छलाँग में पूरा किया, दूसरा भाई दो सीढ़ियाँ कम और तीसरा तीन कम पर अटक गया। मैं छाती तान कर टोली लेने आया किन्तु यह क्या, डिब्बे में टोली तो बहुत थी। माजरा समझ में आने से पहले ही दादी ने कह दिया, तीनों फेल, आप छलांग लगाने के बजाय कहते कि कोई बात नहीं, एक पीस को तीनों को बाँट कर दे दो, तो पास थे।

सेवाओं में व्यस्त रहने के बावजूद भी बच्चों पर ध्यान – एक दिन दोपहर के समय तपस्याधाम में जाते हुए मुझे दादी ने देख लिया। मुझे उनका संदेश मिला। जैसे ही मैं दादी कॉटेज के अंदर गया, दादी ने बड़े अधिकार से उलाहना देते हुए कहा कि दादी को ओमशान्ति कहे तुम्हें कितना समय बीत गया। मैंने कहा, दादी, दो-अढ़ाई महीने बीत गये होंगे। दादी ने कहा, आपको दादी की याद नहीं आती है, तो मैंने कहा कि दादी, आपकी व्यस्तता के बावजूद मैं आपसे ओमशान्ति करने आता रहूँगा। कुछ वर्षों पहले, मुझे राजस्थान पत्रिका प्रबन्धन द्वारा मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के लिए सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान लेने के लिए मुझे प्रात: पाँच बजे जाना था जिस कारण मैंने एक दिन पहले दादी से छुट्टी ली। मेरे साथ कुछ बहनें भी जोधपुर गईं। वापसी पर एक बहन की तबियत बिगड़ने के कारण हम रात्रि को सिरोही में रुक गए। रात्रि करीब साढ़े ग्यारह बजे शान्तिवन से फोन आया कि दादी जी आपको याद कर रही हैं कि आपको कौन-सा सम्मान मिला है, अभी तक दिखाया नहीं। स्वास्थ्य अच्छा न होने के बावजूद भी दादी इस प्रकार बच्चों का ध्यान रखा करती थीं। अब न केवल उनकी स्मृतियाँ ही शेष रह गईं हैं बल्कि उनके महानतम् जीवन चरित्र ने उन्हें अमर बना दिया है। उनके पद-चिह्नों पर चलने का दृढ़ संकल्प ही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑